लोक साहित्य
कमलेश यादव

दक्षिण दिशा के लिए प्रयुक्त शब्द रक्सहूं

छत्तीसगढ़ में दक्षिण दिशा के लिए रक्सहूं शब्द का प्रचलन है। छत्तीसगढ़ी में राक्षस को रक्सा कहा जाता है। दक्षिण दिशा के लिए अन्य कोई शब्द नहीं है। दक्षिण दिशा के लिए रक्सहूं शब्द भगवान श्रीराम के समय से ही प्रचलित है ऐसा माना जाता है। उस समय छत्तीसगढ़ के दक्षिण भू भाग पर राक्षसों ने कब्जा कर रखा था। उनके आतंक की छाप लोक स्मृति में इतनी गहरी थी कि दक्षिण दिशा के लिए रक्सहूं शब्द रूढ़ हो गया। लोक स्मृतियों के पीछे इतिहास का कोई न कोई तथ्य, किसी न किसी अंश में छिपा रहता है। यह उसका उत्कृष्ट उदाहरण है। प. लोचन प्रसाद पाण्डेय ने लिखा है - पुरातत्व के साथ साहित्य तथा लोकवार्ता का भी उपयोग साहित्य लेखन में किया जाना चाहिए। छत्तीसगढ़ के देवारों की लोक गाथाओं में रतनपुर नरेश कल्याण साय के मुगल दरबार में जाने का विवरण मिलता है। इस तथ्य का उल्लेख किसी ऐतिहासिक ग्रंथ में नहीं मिलता है, किन्तु बाद में तुजके जहांगीर में इस तथ्य की पुष्टि हुई तो देवारों की लोक गाथा में इस प्रमाण को स्वीकार किया गया।

ऐतिहासिक
डा. सुनीत रमेंद्र मिश्र

बड़ काम अइस तिलक स्वराज कोश

तिलक स्वराज के नाम से रुपया पैसा जमा करे बर महात्मा गांधी जी रायपुर आए रिहिन। वइसे हमर रायपुर अऊ छत्तीसगढ़ में सबले पहिली गांधी जी ह 1920 के बछर दिसंबर महीना में अइस अउ कंडेल नहर के जउन आंदोलन होय रिहिस तेकर नाव ले सुंदर लाल शर्मा उनला ले बर कलकत्ता गे रिहिन अउ संग म लइन। उनकर आय के पहली अंग्रेज मन कंडेल सत्याग्रह ल बंद करे बर किसान मन उपर जेन पानी चोराय के आरोप लगाए रिहिन संगे संग डाड़ बोड़ी ले रिहिन ओला लहूटा दिन। तब ले गांधी जी 21 दिसम्बर के कंडेल आय रिहिस। गांधी जी के आय ले छत्तीसगढ़ के मनखे मन में आजादी के लड़ई में भाग ले के रद्दा मिलिस। आनंद समाज वाचनालय के बाजू में वोमन सभा करिन। जीहां अभरे मनखे मन तिलक स्वराज कोश के नाव ले रुपिया पइसा, सोना चांदी के पहिरे गहना ल उतार के गांधी जी ल दे दिन। ऐसने उत्साह देखे बर मिलिस।

सुरता
बन्धु राजेश्वर खरे

साहित्यिक गतिविधियों में क्रियाशील थे विट्ठल

छत्तीसगढ़ के साहित्य संसार में गोविन्द राव उपाध्याय जी को गोविन्द राव विट्ठल नाम से जाना जाता था। विद्यालयीन शिक्षा के बाद आपकी नियुक्ति पटेवा शाला नवापारा राजिम में प्रधान अध्यापक के पद पर हुई थी। इसके बाद गरियाबंद जिले में अध्यापन कार्य करते यहीं के निवासी हो गए। गिरि कंदराओं से घिरा गरियाबंद आदिवासी अंचल में रह कर शिक्षा और साहित्य के लिए आपने अपने जीवन को समर्पित कर दिए।आप पंडित सुंदर लाल शर्मा जी के संपर्क और प्रेरणा से नागलीला ग्रन्थ की रचना की। 1924 से 32 के बीच आपकी दो कृतियां प्रकाशित हुई। आपकी तीन प्रकाशित कृतियां उपलब्ध हैं। कई नाटकों का लेखन और सफल मंचन भी आपके द्वारा हुए। आपके मार्गदर्शन में कई कुशल साहित्यकार अपनी लेखन से इस अंचल में अपनी पहचान बनाए। आपकी लेखनी का प्रभाव अंग्रेजों पर भी पड़ा। माधव राव सप्रे, लोचन प्रसाद पाण्डेय और मैथिलीशरण गुप्त जी से भी आपका आत्मिक संपर्क रहा। आपने कई बंगला भाषा के साहित्य का हिन्दी में अनुवाद भी किया। साहित्य सेवा में लीन रहते नवम्बर 1966 को आप बैकुंठवासी हो गए।

छत्तीसगढ़ के बस्तर अंचल में माई भंगाराम के प्रभाव क्षेत्र को नौ परगना में बांटा गया है। प्रत्येक परगने का एक मांझी मुखिया होता है, यह मुखिया अपने क्षेत्र के जातरा हेतु चंदा वसूलता है, जातरा आदि धार्मिक कार्यों की सूचना देता है और बैठकों में भाग लेता है। देवी देवता संबंधी छुटपुट विवादों को परगना में ही निपटाया जाता है। मांझी या मुखिया वंश परम्परा के अनुसार नियुक्त किए जाते हैं।

धार्मिक : घनश्याम सिंह नाग

बस्तर अंचल में माई भंगाराम की पूजा अर्चना

1. गढ़ सिलयारा
यह गढ़ सिलयारा केशकाल नगर पंचायत के अंतर्गत आश्रित ग्राम है। इस परगना के अंतर्गत ग्रामों की संख्या 480 है। यहां अनेक पुरावशेष हैं। केशकाल घाटी भी गढ़ सिलयारा राजस्व ग्राम के अंतर्गत आता है। अब इसे केशकाल परगना भी कहते हैं। इस परगना के मुखिया ग्राम गढ़ धनोरा में निवास करते हैं।

2. अड़ेंगा
यह एक ऐतिहासिक महत्व का ग्राम है जहां नलयुगीन स्वर्ण मुद्राएं मिली हैं। इस परगना में कुल 18 गांव हैं।

3. विश्रामपुरी
यह ग्राम विकास खंड बड़े राजपुर का मुख्यालय है। इस परगना में कुल 29 राजस्व ग्राम हैं।

4. कोपरा
विकास खंड बड़े राजपुर के अंतर्गत कोपरा परगना में 12 ग्राम आते हैं।

5. कोनगुड़
विकास खंड फ़रसगांव के अति दुर्गम क्षेत्र में यह परगना है जहां विकास खंड अंतागढ़ के कुछ ग्राम आते हैं। इस परगना में 50 गांव हैं, इसे झोड़ियान परगना के नाम से भी जाना जाता है।

6. आंवरी
केशकाल विकास खंड के अंतर्गत आंवरी परगना में 20 गांव आते हैं।

7. कोंगेरा
यह गांव वर्तमान कांकेर जिला अंतर्गत है जिसमें 18 गांव आते हैं, जो केशकाल घाटी के नीचे बसे हुए हैं।

8. सोनबाल
कोंडागांव विकास खंड के अंतर्गत सोनबाल परगना में 30 गांव आते हैं अधिक दूरी में निवास होने के कारण निकट के ग्राम पिपरा को परगना मान लिया गया है।

9. आलोर
विकास खंड फ़रसगांव का यह छोटा सा परगना है। इस परगना में मात्र 5 गांव आते हैं।

पर्यटन : डा. सुधीर पाठक

प्राकृतिक रमणीय स्थलों में भेड़िया पत्थर जलप्रपात

छत्तीसगढ़ के सरगुजा अंचल में कुसमी चांदो मार्ग से 30 कि मी की दूरी पर ईदरी ग्राम से तीन कि मी दूर पश्चिम में भेड़िया पत्थर जलप्रपात है। यहां पर भेड़िया नाला का जल दो पर्वतों के बीच सघन वन के बीच प्रवाहित होता है। यही प्रवाह ग्राम ईदरी के पास हजारों फीट की ऊंचाई से नीचे गिरता है। यह पानी का नीचे गिरता दृश्य पर्यटकों को अपनी और आकर्षित करता है। ऊपर की दोनों पर्वत श्रृंखलाएं संयुक्त हैं जिससे एक स्वाभाविक पुल का रूप बन जाता है। इस स्थान पर एक प्राकृतिक गुफा भी है जहां पहले भेड़िया रहा करते थे। यही कारण है कि इस स्थान को भेड़िया पत्थर कहा जाता है।
जलप्रपात के दक्षिण दिशा में करीब तीन कि मी की दूरी पर मगाजी पर्वत की चोटी है। इस तरह का नैसर्गिक सौंदर्य बहुत कम देखने को मिलते हैं। इस चोटी पर वनवासियों का बघचंडी देव स्थापित हैं, जहां वनवासी वर्ष में एक बार चंडी देवता की पूजा अर्चना धूमधाम से करते हैं।

लोक संगीत
डा. अर्चना पाठक

अंचल में पखावज और तबला वादन की शुरुआत

छत्तीसगढ़ अंचल में रायगढ़ दरबार में पखावज और तबला वादन की भी दीर्घ परम्परा रही है। राजा घनश्याम सिंह, राजा भूपदेव सिंह के पिता स्वयं एक अच्छे पखावजी थे। उनके पुत्र लाल नारायण सिंह और पील लाल सिंह को तबले की शिक्षा के लिए बनारस भेजा गया था। राजा भूपदेव सिंह के दरबार में ठाकुर लक्ष्मण सिंह जैसे श्रेष्ठ पखावजी थे। रायगढ़ दरबार में मृदंग और तबला के श्रेष्ठ वादकों का लगातार आवागमन एक सदी पूर्व से होता आ रहा है। यह कला प्रेम और आकर्षण निरन्तर बढ़ता गया और राजा साहब के शासन काल में उसका उत्कर्ष चरम पर था। राजा चक्रधर सिंह के दरबार में ठाकुर दास जी, शंभू महाराज, पंडित रामदास, बासुदेव पखावजी, कादिर बख्श खां, उस्ताद नत्थू खां, और बाबा मलंग खां आदि उस्ताद लंबे समय तक रहे। इन उस्तादों की शिष्यों की पहली टोली में धूरमिन दास, अनुज राम, सुखा राम और मुकुत राम को सर्वप्रथम तबले की शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया गया।

गांव की कहानी
डा. पीसी लाल यादव

कई महत्व को संजोया गांव बागुर

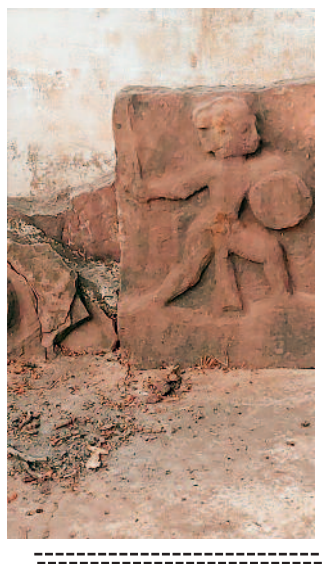

छत्तीसगढ़ के खैरागढ़-गंडई -छुईखदान जिला अंतर्गत गंडई से 5 कि मी दूर पूर्व में बागुर गांव स्थित है। वर्तमान में यह समृद्ध गांव है। यहां ज्यादातर किसानों की आबादी है। यहां कई स्थानों पर पुरातात्विक महत्व के पाषाण शिल्प बिखरे पड़े हैं। इनमें सर्वाधिक महत्व का एक विशाल शिवलिंग है, जो शाला भवन निर्माण के दौरान नींव की खुदाई में मिला है। इसी स्थान पर सोमवंशीकालीन बड़े आकार की ईंटें भी मौजूद हैं। इससे यह आभास होता है कि यहां विशाल शिव मंदिर रहा होगा। इस स्थान के पूर्व में इमली पेड़ के नीचे प्रस्तर की कई खंडित मूर्तियां और ईंटें पड़ी हैं। प्राचीन मंदिर की दीवारें स्पष्ट दिखाई पड़ती हैं। यहीं मंदिर की द्वार शाखा की पुष्प वल्लरि से युक्त शिलाएं भी मौजूद हैं, जो यहां प्राचीन काल में मंदिर होने की संभावना को बल देती है। इसी तरह यहीं पर दो योद्धाओं की प्रस्तर प्रतिमाएं हैं। इस गांव से सुरही नदी के किनारे एक टीला है जहां पर भी पुरातात्विक महत्व की मूर्तियां हैं, जिनमें काले पत्थर पर उत्कीर्ण गणेश की प्रतिमा प्रमुख हैं।